Guided by:-
Dr. Mahesh Kumar
Deptt. of Commerce
S.N.S.R.K.S College
SAHARSA

Specialised Y.C

B.C. II

ख्याति को परिभाषित कीजिए तथा इसकी गणना के सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए।

Ans:- अधिक लाभ कमाने की क्षमता ख्याति कहलाती है। ख्याति की विभिन्न परिभाषाएँ दी गयी हैं। इनमें से निम्न प्रमुख हैं:-

लॉर्ड मिकनाटन के अनुसार," ख्याति का वर्णन करना बहुत आसान है लेकिन इसकी परिभाषा देना बहुत कठिन है। यह व्यापार के अच्छे नाम, सम्बन्ध व सम्पर्क का लाभ है। यह एक आकर्षक शक्ति है जो ग्राहकों को लाती है। यह एक ऐसी वस्तु है जो कि पुराने जमे हुए व्यापार को प्रारम्भ कर प्रारंभ हुए नये व्यापार से भिन्न करती है। यह बहुत से तत्वों से मिलकर बनती है। इसके स्वरूप विभिन्न व्यापारों में व एक ही व्यापार में विभिन्न होते हैं।"

डिक्सी के अनुसार," जब एक व्यक्ति ख्याति के लिये कुछ राशि देता है तो वह राशि इसलिए देता है कि ऐसा करने से वह इतनी अधिक आय प्राप्त करेगा जितनी की वह बिना इसे प्राप्त नहीं कर सकता।"

मौरिसी के अनुसार," ख्याति एक फर्म के अनुमानित अधिक उपार्जन का वर्तमान मूल्य है।"

आर. विक्सन के अनुसार," ख्याति एक व्यावसायिक उपक्रम से सम्बन्धित सभी अनुकूल गुणों का मूल्य है।"

स्पाइसर और पैगलर के अनुसार," लेखापालक के दृष्टिकोण से ग्राहकों को आकर्षित करने के भाव में ख्याति का बहुत कम महत्व है जब तक कि इसका विक्री मूल्य न हो। इसलिए लेखापालक के लिए ख्याति वह तत्व है जो व्यवसाय की प्रतिष्ठा, सम्बन्ध या अन्य लाभों से उत्पन्न होता है।

जौनसन के अनुसार," ख्याति सम्पत्ति या व्यवसाय के मूल्य में उस भाग के लिए एक अमूर्त शब्द है जो सम्पत्तियों या व्यवसाय के ऐसे तत्वों से उत्पन्न नहीं होता है जो प्रत्यक्ष रूप से

Scanned with CamScanner

[illegible]

[illegible]

(a) [illegible] वर्षों की संख्या :- [illegible] वर्षों के लाभों को औसत लाभ [illegible]
यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है। एक ही वर्ष के [illegible] लाभ
को ख्याति का आधार नहीं बनाया जा सकता है और बहुत
ही [illegible] वर्षों के लाभों का भी प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि
बहुत पहले वर्षों में भिन्न परिस्थितियों में लाभ या हानि हुई
थी उसकी तुलना में अब परिस्थितियाँ परिवर्तित हो गयी होंगी
और अनावश्यक रूप से उनका प्रभाव औसत लाभ पर पड़ता
है।

(b) शुद्ध लाभ और सकल लाभ :- वर्षों की सं० का निर्धारण करने
के पश्चात् यह प्रश्न विचारणीय है कि सकल लाभों का
जोड़ किया जाय अथवा शुद्ध लाभ का। यद्यपि ~~कुछ~~ कुछ
व्यवसायी सकल लाभ का प्रयोग करना अच्छा समझते हैं लेकिन
यह विचारधारा सन्तोषजनक नहीं है। वर्तमान काल में शुद्ध लाभ
का प्रयोग किया जाता है, अत: इन वर्षों के शुद्ध लाभों के आधार
पर ही औसत निकाला जाना चाहिए।

(c) असाधारण आय एवं व्यय :- यदि किन्हीं कारणों से व्यवसाय में
असाधारण आय या व्यय हुआ हो तो सम्बन्धित वर्ष के लाभ
या हानि की गणना करते समय इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए
अर्थात् वर्ष के शुद्ध लाभ में से असाधारण आय को घटा
देना चाहिए और असाधारण व्यय को जोड़ देना चाहिए।

Scanned with CamScanner

4) ह्रास कोष पद्धति (Depreciation fund Method) :— जब [illegible]
सम्पत्तियाँ जैसे मशीन आदि प्रयोग की जाती है और उनको इनकी उपयोगिता के बाद प्रतिस्थापित करना होता है तो इस विधि का प्रयोग किया जाता है। इस विधि के अनुसार प्रत्येक वर्ष के अन्त में ह्रास के लिए एक निर्धारित राशि लाभ-हानि खाते से डेबिट की जाती है, और कोष खाते में संचित की जाती है। इस खाते को ह्रास कोष खाता (Depreciation fund Account) कहा जाता है, इस प्रणाली को ही (Sinking fund Method) सिंकिंग फण्ड प्रणाली भी कहा जाता है।

5) बीमा पॉलिसी पद्धति (Insurance policy Method) :- इस पद्धति में ह्रास की राशि को बीमा पॉलिसी प्रीमियम के रूप में बीमा कम्पनी को दिया जाता है। इस पॉलिसी को देने वाला निश्चित अवधि की समाप्ति पर एक निश्चित राशि पॉलिसी होने वाले को देता है। यह प्रणाली बिल्कुल ह्रास कोष पद्धति की तरह है।

6) वार्षिक मूल्यांकन प्रणाली (Annual Valuation Method):- इस पद्धति के अन्तर्गत प्रति वर्ष नये सिरे से सम्पत्तियों का मूल्य आंका जाता है फिर मूल्य की तुलना के आधार पर ह्रास निकाला जाता है, और यदि मूल्यांकन करने पर सम्पत्ति का मूल्य घट जाता है तो इस ह्रास का लेखा किया जाता है।

7) ह्रास, मरम्मत व नवीनीकरण के लिए एक ही रकम लगाने वाली विधि (Charging one sum to Recover Repairs, Renewal and Depreciation):—
इस प्रणाली के अनुसार एक निश्चित अनुमानित रकम लाभ-हानि खाते के डेबिट पक्ष व मरम्मत और नवीनीकरण उचित खाते के क्रेडिट पक्ष में लिखी जाती है।
//

Scanned with CamScanner

[illegible]

2) ह्रासमान शेष पद्धति (Diminishing Balance Method):- इस पद्धति के अन्तर्गत सम्पत्ति के पुस्तक मूल्य पर ह्रास निकाला जाता है, [illegible] प्रत्येक वर्ष पुस्तकीय मूल्य में से ह्रास की रकम को घटाकर शेष राशि पर ह्रास निकाला जाता है, [illegible] सम्पत्ति का मूल्य और [illegible] अन्तिम मूल्य तथा [illegible] अवधि दी रहती है और इसके आधार पर ह्रास का [illegible] है।

Method:-

$$\text{Price of the assets} \times \left[\frac{100 - \text{Rate of Dep}}{100}\right]^n = \text{W.D.V.}$$

Here 'n' means life of the assets in years.

इस विधि से ह्रास काटते समय निम्न नियम ध्यान में रखे जाते हैं:— i) जिस समय सम्पत्ति में वृद्धि हुई हो ह्रास उसी अवधि के आधार पर लगाया जाता है (ii) यदि वृद्धि का समय ज्ञात न हो तो सम्पत्ति पर वर्ष के मध्य के समय के आधार पर ह्रास लगाया जाता है।

3) वार्षिक वृत्ति प्रणाली (Annuity Method):- इस प्रणाली के अन्तर्गत सम्पत्ति के मूल्य में ह्रास के अतिरिक्त उस ब्याज का भी प्रबन्ध किया जाता है जिसे सम्पत्ति के मालिक द्वारा प्राप्त किया जाता यदि धन को सम्पत्ति में लगाने के स्थान पर किसी अन्य जगह लगाया जाता। इसमें ह्रास की राशि से ह्रास खाता डेबिट और सम्पत्ति खाता क्रेडिट किया जाता है। प्रतिवर्ष एक ही रकम ह्रास की तरह काटी जाती है। इस दृष्टि दृष्टिकोण से यह प्रणाली स्थायी प्रभाग प्रणाली की तरह है, क्योंकि इस प्रणाली में भी ह्रास की राशि प्रतिवर्ष एक ही रहती है।